

ठहर जा ओ मानव!
मंजिल वहीं,
संसार है
दिशा बदलने का



राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

"ठहर जा ओ मानव, किधर जा रहे हो; मंजिल नहीं, तुम जिधर जा रहे हो।" यह पंक्ति केवल एक आध्यात्मिक गीत नहीं, बल्कि आज के युग की सबसे बड़ी चेतावनी है। ऐसा लगता है मानव स्वयं परमात्मा व्यस्त, थके और दिशाहीन मानव को पुकार रहे हों - "जरा ठहरते, सोचो, जिस दिशा में तुम भाग रहे हो, क्या वास्तव में वही तुम्हारी मंजिल है?"

आज का मनुष्य पहले से अधिक शिक्षित है, अधिक संपन्न है और तकनीकी दृष्टि से अधिक सक्षम है। उसके हाथ में पूरी दुनिया है लेकिन मन में शांति नहीं है। साधन बढ़े हैं, पर संतोष घटा है। संपर्क बढ़े हैं, पर संबंध कमजोर हुए हैं। ऊँची-ऊँची इमारतें खड़ी हो गई हैं लेकिन भीतर का मन खाली होता जा रहा है। वही आधुनिक जीवन का सबसे बड़ा विरोधाभास है।

इसका मूल कारण यह है कि मनुष्य ने अपनी वास्तविक पहचान खो दी है। वह स्वयं को शरीर मानकर शरीर से जुड़ी उपलब्धियों को ही जीवन का लक्ष्य समझ बैठता है। जबकि वह मूलतः शांति, प्रेम, पवित्रता और आनंद स्वरूप आत्मा है। जब आत्मा स्वयं को भूल जाती है, तब वह बाहरी वस्तुओं में सुख खोजती है और अंततः निराशा का अनुभव करती है।

गीत की पंक्ति - "साधनों में उलझा हुआ तेरा मन है, बीच-बीच में फँसा ये जीवन है" - आज के युग का सजीव चित्र प्रस्तुत करती है। मनुष्य साधनों का स्वामी बनने के बजाए उनका दास बनता जा रहा है। सफलता की अभी दौड़ में उसने जीवन का उद्देश्य ही पीछे छोड़ दिया है। परिणामस्वरूप तनाव, अवसाद, असुरक्षा और अशांति उसके स्थायी साथी बनते जा रहे हैं।

ऐसे समय में राजयोग मानव को भीतर की यात्रा का मार्ग दिखाता है। यह सिखाता है कि परिवर्तन बाहर नहीं, भीतर से प्रारंभ होता है। जब आत्मा स्वयं को पहचानती है और परमात्मा शिव से अपना संबंध जोड़ती है, तब उसके भीतर सत्य दिव्य शक्तियाँ जागृत होने लगती हैं। विचारों में पवित्रता आती है, निर्णयों में स्पष्टता आती है और जीवन में संतुलन स्थापित होता है।

गीत की यह पुकार - "आओ बदलें ये चिंतन की धारा, समझें प्रभु के समय का इशारा" - आज विशेष रूप से प्रासंगिक है। अब वर्तमान संगमयुग वह पावन समय है जब परमात्मा शिव स्वयं मानव को नई दिशा देने के लिए अवतरित हुए हैं। उनका संदेश है - पहले स्वयं को बदलो, फिर संसार अपने आप बदलने लगेगा। विश्व परिवर्तन का आधार आत्म परिवर्तन है।

आज पूरी दुनिया शांति, विश्वास और मानवीय मूल्यों की तलाश में है। समाधान केवल नई तकनीक, नई व्यवस्था या नई नीतियों में नहीं, बल्कि नए और श्रेष्ठ संस्कारों वाले मनुष्य के निर्माण में है। जब प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर प्रेम, करुणा, सत्य और पवित्रता के संस्कार विकसित करेगा, तभी एक श्रेष्ठ समाज और स्वर्णिम विश्व की नींव रखी जा सकेगी।

गीत की अंतिम पुकार - "प्रभु का निर्मल कर्णें टुकरा रहे हो?" - हर आत्मा स्वयं से एक आत्मीय प्रश्न करती है क्या हम केवल उपलब्धियों का जीवन जीना चाहते हैं या उपलब्धि के साथ आत्मिक संतुष्टि भी चाहते हैं? क्या हम केवल सफलता चाहते हैं या सफलता के साथ शांति भी?

आज आवश्यकता केवल तेज चलने की नहीं, बल्कि सही दिशा में चलने की है। कुछ क्षण रुककर स्वयं से पूछें - मैं कौन हूँ? मेरा जीवन किस उद्देश्य के लिए है? मेरी मंजिल क्या है?

यदि इन प्रश्नों का उत्तर आत्म-जागृति, परमात्म स्मृति और श्रेष्ठ कर्मों की दिशा में मिलता है, तो समझिए कि मानव ने अपनी वास्तविक मंजिल पहचान ली है। तभी यह गीत केवल सुनने का विषय नहीं रहेगा, बल्कि जीवन का मार्गदर्शक बन जाएगा। यही समय का संदेश है - रुकिए, स्वयं को पहचानिए, परमात्मा से जुड़िए और अपने जीवन को स्वर्णिम भविष्य की ओर अग्रसर कीजिए।

मुझे एक दृश्य याद आ रहा है। वो दृश्य था, कोई ब्राह्मण आत्मा की मृत्यु हुई थी। तो उस समय कोई ने बाबा से क्वेश्चन किया था कि बाबा ये जो कहते हैं कि जब मृत्यु होती है ना, अज्ञान काल में भी कहते हैं कि किसी को तो विमान आता है लेने

के लिए और किसी को यमदूत

लेने आते हैं। तो इसका मतलब

क्या है? तो कोई ने क्वेश्चन

किया कि जैसे इस आत्मा

ने शरीर छोड़ा अच्छी

आत्मा थी तो इसको

क्या विमान लेने आया

या यमदूत आये? तो

बाबा ने बहुत अच्छी

बात सुनाई। बाबा ने

कहा कि कोई यमदूत

किसी लोक में बैठे

हैं क्या जो लेने

आयेंगे। उनका भी तो

कोई लोक होना चाहिए

ना। बाबा ने हमें तीन

लोकों के बारे में बताया है।

उसमें ऐसा कोई लोक ही नहीं। सचमुच विमान आता है या क्या होता है? यानी अच्छे आदमियों के लिए कहते हैं विमान आता है, और जो खराब काम करते हैं उसके लिए कहते हैं यमदूत आता है।

तो इसका मतलब बाबा ने बहुत अच्छा सुनाया। कहा कि विमान आता है इसका मतलब है कि जिसके अच्छे कर्म हैं बाबा का बच्चा बन गया, पवित्र ठीक रहा यानी जो भी मर्यादाएँ हैं ब्राह्मण परिवार की तो उसकी उड़ती कला की स्टेज होती है। होती है ना! तो बाबा ने कहा विमान कोई आता नहीं है लेकिन क्या होता है वो जब शरीर छोड़ता है तो उसको ऐसे ही महसूस

होता है, जैसे मैं उड़ती कला से बाबा के पास जा रहा हूँ। उड़ रहा हूँ। बाकी कोई विमान नहीं, ये लाइट ही उसके लिए विमान होती है। क्योंकि खुद डबल लाइट है ना। तो डबल लाइट को लाइट ही दिखाई

देगी ना, कि आत्मा जा रही है। तो

वो विमान नीचे से ऊपर उड़ता

है तो उसकी उड़ती कला

होने से उसको लाइट ही

लाइट दिखाई देगी। तो

लाइट के विमान में

जैसे जा रहा है, उड़ती

कला से। बाकी खास

कोई विमान बनाने

वाला भी तो चाहिए।

कोई तो बतन होगा कि

जिसमें विमान भी बने।

या यमदूत भी बैठे हों वो

आवे। तो बाबा ने

कहा ये कोई बात

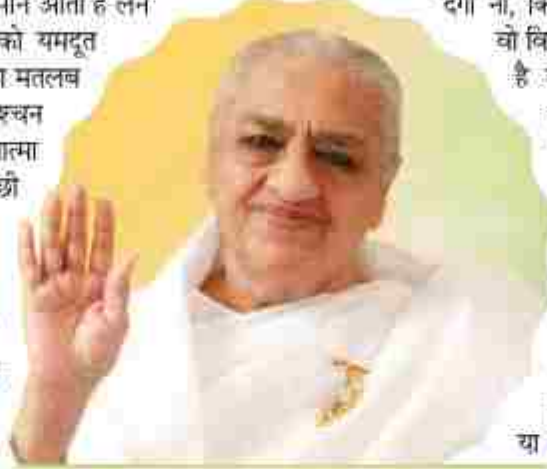
नहीं है, लेकिन

जो बुरे कर्म करते हैं,

जिनमें बहुत पाप किए

हुए, सारे जन्म से लेकर जो पाप किए ना, वो पाप ही उसके आगे यमदूत के रूप में आते हैं। यमदूत क्या होते हैं डराने वाले।

तो अंत समय में वो पाप सामने आते हैं कि मैंने ये कर लिया, ये भी किया, ये भी किया वो ही उसे यमदूत के रूप में दिखाई देते हैं, जैसे उन्हें ले जा रहे हैं। शास्त्रों में भी बताते हैं कि वो परेशान करते हैं, बहुत डरावने होते हैं। ये बाबा ही धर्मराज के रूप में उनके वो पाप सामने लाते हैं। उस समय बाप का रूप तो होता नहीं है ना, उस समय तो धर्मराज का रूप होता है। धर्मराज साथ ही है, वो ही सामने आता है।



राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

मृत्यु के बाद क्या होता है

सच्चाई और सफाई इन दोनों शब्दों का बहुत गुह्य अर्थ है। एक तो मैं सत्य परमात्मा पिता के सत्य ज्ञान के पथ पर हूँ इसलिए मैं सत्य हूँ। एक है सत माना अधिनाशी, दूसरा सत्य माना सच्ची हूँ। फिर है सफाई-सफाई, जैसे घर में कोई किचड़ा न हो तो कहते हैं बहुत सफाई है। दूसरा है मेरे दिल में कोई भी व्यर्थ किचड़ा नहीं

हो। माना न मेरे में इम्प्यूरिटी

का किचड़ा हो, न झूठ-चोरी

या ठगी का किचड़ा हो।

ऐसे स्वभाव, संस्कारों

का भी मेरे में कोई गंद

न हो। किसी प्रकार की

झरमुई-झगमुई, व्यर्थ व

परिचिंतन का भी मेरे में

किचड़ा न हो। दूसरों

के प्रति दोष दृष्टि रख

देखना, दोष दृष्टि

रख दोष से व्यवहार

कर ना।

खुद को

निंदों की

और दूसरों

को दोषी

बनाना - यह

भी सफाई नहीं

है। जिसमें खुद का

देह अहंकार होगा वह कभी भी दिल का साफ नहीं होगा। उसके अन्दर अभिमान का नशा होगा। और सच्चाई वाला सदा निर्मान होगा। जिसमें निर्मानता नहीं है, अन्डरस्टूड है कि उसके अन्दर देह अभिमान है, देह अभिमान है माना वह साफ नहीं है, उसके अन्दर दूसरों के प्रति दोष दृष्टि रहती। साफ दिल वाला अपनी गलतियों की करेक्शन करेगा, रियलाइज करेगा। कई बार कड़ियों को रॉन्ग राइट की भी रियलाइजेशन नहीं होती। समझाओ तो भी समझेंगे नहीं। रियलाइज नहीं करेंगे कि मैं किस बात में रॉन्ग हूँ या किस बात में राइट हूँ। तो यह रियलाइजेशन की शक्ति भी दिल की सफाई से आती है। जो एक सेकण्ड में रियलाइज कर लेते हैं उसे करेक्शन करना भी सहज हो जाता है। दूसरे के कहने से पहले वह

खुद को रियलाइज कर परिवर्तन कर लेते हैं।

सच्चाई वाला, साफ दिल वाला कभी किसके संगदोष में नहीं आता। संग का दोष लगता ही उसे है जो साफ दिल नहीं है। जहाँ साफ दिल नहीं है वहाँ जरूर कोई खोटा है, झूठ है। तो वह संगदोष में जल्दी आ जायेगा। जैसे सोना है वह साफ है, सच्चा है तो उसकी

वैल्यू है और जब उसमें झूठ

अर्थात् अलाए पड़ जाती

है तो उसकी वैल्यू चली

जाती। उसको कहेंगे

मिक्स सोना। तो यह

संगदोष भी हमारी

स्थिति को बहुत खराब

करता है। एक-दूसरे की

सच्ची लगन को तोड़ता

है। बाबा से लगन तभी

टूटती है जब लाइन

क्लीयर नहीं है। फिर संग

का दोष

लग जाता

है और

जहाँ संग का

दोष लगा वहाँ

निश्चय बुद्धि

के बदले संशय

जरूर पैदा होगा। संशय भी अनेक प्रकार का है। एक संशय है जो मैं मानती ही नहीं कि बाबा कौन है। एक सूक्ष्म संशय है जो श्रीमत् का उल्लंघन करते। मर्यादा उल्लंघन करता ही वह है जिसकी दिल में सच्चाई-सफाई नहीं है। जिसे बाबा के साथ का अनुभव नहीं है। बाबा साथ है तो कोई कैसी भी कठिन बात भी आये उसे वह सहज पार कर लेता है, जिसके लिए कहा जाता सच की नांव हिले बहुत पर डूबे नहीं। सच्ची दिल वाला परमात्मा को ही साथी बना लेता और उनके साथ ही रहता है। उनके लिए कितनी भी कोई कठिनाई आवे, वह सहज पार कर लेता है। वह कभी दूसरे के संग में नहीं आता। तो पहले चाहिए बुद्धि की सच्चाई और सफाई, तब ही कनेक्शन राइट होगा।



राजयोगिनी दादी जानकी जी

निश्चय मजबूत है तो

अचल-अडोल स्थिति बनाना

इजी है

जब शांत स्वरूप होकर सभी ओमशान्ति बोलते हैं तो चेहरे में शांति, प्रेम, खुशी और शक्ति यह चारों इकट्ठी दिखाई पड़ती है। चारों का आपस में बड़ा महारा सम्बन्ध है।

दिल में बहुत बातें होते हर बात स्पष्ट हो और उसमें सार भी भरा हुआ हो क्योंकि कोई भी बात स्पष्ट होने से कभी डाउट नहीं उठता, मूँझते नहीं हैं। निश्चय मजबूत है तो अचल-अडोल स्थिति बनाना इजी है, यह भी मेरा भाग्य है। संशय डोलायमान करता है, हिलाने लग पड़ता है। फिर जब हिलते हैं तो चलायमान होते हैं जिससे रेत के लहू बन जाते हैं। बार-बार चलायमान, डोलायमान होने वाले सेकण्ड में रेत के लहू के समान हो जाएंगे।

अगर किसी की जीभ रस बहुत है, लेकिन हजम करने की ताकत नहीं है, जब हजम नहीं कर सकता है तो ताकत कहाँ से आवे? सिर्फ बाबा की मुरली बहुत अच्छी, बहुत अच्छी कहते रहने से क्या होगा? क्योंकि अन्दर में डोलायमानी और चलायमानी का कुछ गड़बड़ घोटाला है इसलिए हजम ही नहीं होता है। तो कई भाई-बहनों को शक्ति को देखते लगता है कि इन्होंने शायद कुछ खाया-पिया नहीं है। लगता ही नहीं है कि वह कोई ब्रह्माभोजन खाया हुआ है या ब्रह्मा बाबा के मुख से कुछ ज्ञान सुना है। परिचिंतन की जो खामी है वो कभी ब्राह्मण भी बनने नहीं देगी। देवता तो सतयुग में बनेंगे उसके लिए फरिश्ता बनना है। जो सच्चा पक्का ब्राह्मण होगा वही फरिश्ता बनेगा।

जो सच्चा होगा वो पक्का बन सकता है। थोड़ा भी झूठा है तो उसके आगे मुश्किलें बहुत आएंगी, उनके लिए मुस्कुराना मुश्किल है और जो सच्चा और पक्का होगा उसके लिए सब कुछ सहज होगा, वही यह गीत गायेगा कि तुमने हमको अपना बनाके मुस्कुराना सोखा दिया। तेरो मुस्कुराहट से किसी की मुश्किलें मिट जायें तो जो बाबा ने दिया है उसको यूज करो तो मुक्ति और जीवनमुक्ति का वर्सा मिलेगा। मुक्ति माना कोई भी बात से फ्री, कोई मुझे रोक नहीं सकता, बंधनमुक्त है। जीवनमुक्त माना न्यारा और प्यारा है। जीवन में है पर सबसे न्यारा है। बंधनमुक्त माना लगाव, झुकाव और दबाव से मुक्त। किसी भी प्रकार के कलियुगी कर्मबंधनों से मुक्त। वह किसी के आगे झुकता नहीं। उसे नशा रहता है मेरे बाबा जैसा कोई नहीं।

कभी भी किसी प्रकार से शक्ति छोटी न हो जाए। कभी गुस्से से लाल हो जाएगा, कभी थोड़ा अपमान हुआ तो पीली हो जाएगी। सोचेगा यह काम तो कुछ भी नहीं करते नाम इनका ही आता है, मेरा कभी नाम ही नहीं आता है, यह सोचा तो लगा माया का गोला। अरे! नाम से काम नहीं। तुम काम ऐसा करो जो नाम भगवान के मुख पर आवे। पर जब तक यहाँ वहाँ नाम रूप की बीमारी है और जो नाम कमाने के लिए काम करता है वो भगवान के मुख की संतान नहीं है। भगवान के मुख की संतान वो है जिसके मुख पर उसका नाम है, उसका नाम फिर भगवान के मुख पर है।